शनि रक्षा कवच

विनियोग– अस्य श्री शनि रक्षा कवच स्तोत्र मन्त्रस्य शनैश्चर देवता मनु भक्त कृत दोहा छन्दः सकल बीज समाहिता मम भक्तिशक्तिनियंत्रिता शनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग।

(दायें हाथ में जल लेकर 'अस्य श्री शनि रक्षा कवच स्तोत्र मन्त्रस्य' से 'पाठे विनियोग' तक बोलकर जल नीचे छोड़ दें, फिर पाठ करें)

ध्यानम्

ॐ सूर्यसुतं महेश अंशं, मातु छाया नन्दनम्।
कालरूपं कृष्णवर्णं, मन्दगते तव वन्दनम्॥

भगवान सूर्य के सुपुत्र, भगवान शंकर के अंशरूप व माता छाया के लाल, जो कालस्वरूप व काले रंग के हैं तथा मंदगति चलने वाले है। मैं उनके चरणों की वन्दना करता हूँ।

सर्वसौख्यप्रदातारं दुष्टदर्पविमर्दकम्।
भक्तार्तिनाशनं देवं, शं शनिं प्रणमाम्यहम्॥

सभी सुख प्रदान करने वाले तथा दुष्टों के अहम् का नाश करने वाले, भक्तों के दुःखों का शमन करने वाले, शं बीज वाले भगवान शनि को मैं प्रणाम करता हूँ।

कोणस्थ, रौद्र, बभ्रु, यम, शनि शौरी पिंगलः।
अधिदैव अक्षय कृष्णा, मन्दअरू पिप्पलः॥१॥

वे कोणस्थ, रौद्रान्त, बभ्रवै, पिंगल, शौरी, मन्द, पिप्पल, शनैश्चर, कृष्ण, किसी भी काल में जिनका क्षय नहीं होता, अविनाशी तथा सभी देवों में प्रधान देवता हैं।

अज अगम्य अजेय अनघ, अल्पभोज विख्यात।

होत विषम पीडा विकट, बढ़े असगुन उत्पात॥२॥

जिनका वर्णन बुद्धि से नहीं हो सकता, जो असीमित, अजन्मा और शोकहीन है तथा अल्प भोजन ग्रहण करने वाले विश्वविख्यात हैं, जिनके विषम होने पर अत्यधिक पीडा अपशकुन व उपद्रव भोगने पड़ते हैं।

जिनकी सकल संसार में, विस्तृत कीर्ति अनूप।
भूप से वो रंक करें, करें रंक से भूप॥३॥

जिनकी अद्वितीय कीर्ति सकल संसार में व्याप्त है, जो राजा को भिखारी व भिखारी को राजा बना देते हैं।

निर्भय करो रक्षा करो, जान मुझे अनजान।
वन्दन चरणों में करूँ, नाथ तुम्हें पहचान॥४॥

हे देव! मुझे अनजान जानकर मेरे भय का हरण करो, मेरी रक्षा करो, तुम्हीं मेरे नाथ हो, यह जानकर मैं आपके चरणों की वन्दना करता हूँ।

पूरब में शनिदेव जी, पश्चिम में कोणस्थ।
शत्रु शीश खंडित करे, भक्त शीश वर-हस्त॥५॥

शनिदेव जी पूरब में, कोणस्थ पश्चिम में जो शत्रु के शीश को काट देने वाले तथा भक्तों के शीश पर वरदायी हस्त रखने वाले हैं, मेरी रक्षा करें।

उत्तर में बभ्रु सदा, दक्षिण में पिंगल।
अभिघाती का देव जी, कीजै विफल सब बल॥६॥

उत्तर दिशा में बभ्रु तथा दक्षिण दिशा में पिंगल, जो शत्रु मेरे विनाश की इच्छा रखते हैं, उनको बलहीन करें।

अग्निकोण कालाग्नि करे, संकट सारे दूर।
प्रबाधक शनिदेव जी, करें असुर बल चूर॥७॥

पूर्व-दक्षिण में कालाग्नि मेरे सारे संकट दूर करें। वे भक्तों के कष्टों

का निवारण करने वाले सभी शत्रुओं के बलों का मर्दन करें।

नैऋत में पिप्पल रहें, लेकर कर में भाल।
नीलवर्ण वायव्य में, बनें दुष्ट का काल॥८॥

पश्चिम-दक्षिण में पिप्पल हाथ में भाल लेकर मेरी रक्षा करें। उत्तर-पश्चिम में नीलवर्ण दुष्टों का काल बन मेरी रक्षा करें।

ईशान यम विराजे सदा, लेकर अंकुश हाथ।
सजग रहे रक्षित करें, प्रहर दिवस अरू रात॥९॥

उत्तर-पूर्व में यम सजग होकर अंकुश हाथ में लेकर दिन और रात के सभी प्रहरों में मेरी रक्षा करें।

ऊपर रहे शौरी सदा, नीचे देवा मंद।
भव बन्धन का नाश कर, करें हर्ष आनंद॥१०॥

शौरी ऊपर से व मंदगति नीचे की ओर से भव बंधन मायादि बंधन व दुष्टों का विनाश कर हर्ष और आनन्द प्रदान करें।

दाएँ विराजे वज्रदेह, बाएँ छाया लाल।
दशों दिशा रक्षित करें, शनिदेव महाकाल॥११॥

दाएँ से वज्रदेह, बाएँ से छाया माँ के सुत दशों दिशा सब और से महाकाल शनि मेरी रक्षा करें।

दिव्य देह रक्षें शिखा, सिर पर शोभे शांत।
घोर विराजे ललाट में, अतुलित बल विक्रांत॥१२॥

दिव्य देह शिखा (चोटी) की सिर के ऊपर शांत रक्षा के लिए विराजित हों, मस्तक की घोर जो अपार बलशाली व प्रतापी हैं, मेरी रक्षा करें।

जटाधर सदा केश की, रौद्र रहे भ्रू-मध्य।
भव्य विराजे भौंह में, रोमकूप सुरवन्द्य॥१३॥

बालों की जटाधर भौंह, बीच रौद्र भव्य भौंह की सुरवन्द्य रोमकूप में

स्थित होकर रक्षा करें।

नाकद्वार में ही रहें, ग्रहराज और खञ्ज।
आँख बीच विश्वस्थ हों, शमन शीघ्र सब झंझ॥१४॥

नाक के द्वारों पर दाएँ ग्रहराज, बाएँ खञ्ज व आँखों के बीच विश्वस्थ सभी तूफानों व कष्टों का शीघ्रता से शमन करें।

शिखिकण्ठ रक्षा करें, दोनों कर्ण की आन।
केतु कपोल रक्षा करें, भीषण रक्षें घ्राण॥१५॥

दोनों कानों की शिखिकण्ठ, दोनों गालों की केतु और भीषण घ्राण शक्ति की रक्षा करें।

कर्णमूल क्रोधन बसें, दीर्घ नासिका माँहि।
करें प्रहार रिपु पुंज पर, जान भीषिका खाँहि॥१६॥

कान के मूल में क्रोधन, नासिका में दीर्घ वास कर मेरे महावैरियों के समूह पर प्रहार कर उन्हें विकट विपत्ति जानकर उनका भक्षण करें।

कृष्ण वर्ण रक्षा करें, ऊपर वाले ओठ।
आत्म-भू रक्षा करें, बसकर मम अधरोठ॥१७॥

ऊपर वाले ओष्ठ की कृष्णवर्ण व नीचे वाले ओष्ठ की आत्म-भू स्थित होकर रक्षा करें।

सूर्यपुत्र जिह्वा बसें, करें वाणी कल्याण।
दुर्निरीक्ष्य दन्तावलि, करें नाथ परित्राण॥१८॥

जिह्वा की सूर्यपुत्र वाणी का कल्याण करते हुए रक्षा करें व दंत पंक्तियों की दुर्निरीक्ष्य नाथ पूर्ण रूप से रक्षा करें।

कोटर नेत्रों की करें, कटि रक्षे बली मुख।
मिटे अमंगल तीव्र गति, देवें अविलंब सुख॥१९॥

दोनों नेत्रों की कोटर व बलीमुख मेरी कमर की रक्षा करें, जिससे

अमंगल तीव्रता से नष्ट हों व शीघ्रता से सभी सुख मुझे मिलें।

भयदायी भुजा रक्षे, संवर्त्तक दोनों कंध।
शनैश्चर नाभि में रहे, बनकर अरि गल फंद॥२०॥

भयदायी बाँहों की, संवर्त्तक दोनों कंधों की, नाभि की शनैश्चर, दुष्टों के गलों का फंदा बनकर रक्षा करें।

कंठ विराजे विभीषणा, सदा बचावे अंग।
अखण्ड दण्ड धारी शनि, रहे सदा ही संग॥२१॥

गल में विभीषण स्थित होकर सूक्ष्म नाड़ियों की व अखण्ड दण्डधारण करने वाले शनि सदा साथ रहकर रक्षा करें।

ग्रहेश्वर ग्रीवा बसे, पोषे चंद्र समान।
महाबली रक्षा करें, मेरुदण्ड की आन॥२२॥

ग्रहेश्वर ग्रीवा में स्थित होकर जैसे चन्द्रमा वनस्पतियों का पोषण करता है, ऐसे पोषण करें व महाबली मेरी रीढ़ की रक्षा करें।

कंठ नली कालात्मा, बसें बना निज धाम।
भयहारी निर्भय करो, करूँ स्तुति प्रणाम॥२३॥

गल नलिका में कालात्मा धाम बना स्थित हों, हे भयहारी मुझे भयहीन कीजिए, जिससे मैं आपकी स्तुति वंदन कर सकूँ।

सब चक्रों की रक्षा करें, कलीनाथ सुरराज।
भक्त ढाल बन हो खड़ें, काँपे असुर समाज॥२४॥

शरीरस्थ सभी चक्रों की, कलियुग के नाथ सुरराज रक्षा करें व सदा भक्तों की ढाल बनें, जिससे असुरों में भय व्याप्त हो।

खद्योत रक्षें अंगुलिका, श्री ईशान नखवृन्द।
कुक्षिदेश भुवनेश्वर, बसें सदा सानन्द॥२५॥

अंगुलियों को खद्योत व नखों को ईशान व भुवनेश्वर मेरे कुक्षिप्रदेश

में आनन्द सहित स्थित होकर रक्षा करें।

राशीनाथ रक्षा करें, नित्य मम स्तन देश।
विनशे शोक मन का 'मनु', काटे सभी क्लेश॥२६॥

मेरे स्तन प्रदेश की राशीनाथ, मेरे मन के शोक को खत्म कर रक्षा करें।

सिद्धसंकल्प हृदय की, रक्षा करें सदैव।
भीषण उदर समाय कर, नाशे सब दुर्दैव॥२७॥

वे सिद्धसंकल्प मेरे हृदय की सदैव रक्षा करें व भीषण पेट में स्थित होकर मेरे दुर्भाग्य का विनाश करें।

कालपुरूष रक्षें सदा, मर्मस्थल गुह्यांग।
प्रलयंकर नित ढाल बन, रक्षे मम लिगांग॥२८॥

नाजुक गुप्तांगों की कालपुरूष व मेरे लिंगादि की प्रलयंकर ढाल बनकर रक्षा करें।

महाघोर गुद की करें, रक्षा नित्य आय।
असुर संहारक देव शनि, प्रतिकूलता खाय॥२९॥

नित्य ही महाघोर मेरी गुदा की रक्षा करें व असुरों का दलन करने वाले शनि मेरी सभी प्रतिकूलताओं का हनन करें।

भैरव करें सब ओर से, टखनों को निर्मल।
पाद पृष्ठ रक्षित रखें, नाशे विरोधि दल॥३०॥

भैरव सभी ओर से मेरे टखनों को निर्मल करे व विरोधियों के दल का विनाश कर मेरे पैरों के पिछले भाग की रक्षा करें।

भयानक रूप जानु की, वरेण्य दोऊ जंघ।
रक्षें नित्य देव जी, लेकर कर में खंग॥३१॥

नित्य हाथ में तलवार लेकर वरेण्य दोनों पिंडलियों की व भयानक मेरे घुटनों की रक्षा करें।

कृष्ण रक्षें पादांगुली, बन दुर्दम दुर्जेय।
तलवें रक्षे महासिद्ध, नखगण धरमी ध्येय॥३२॥

पैर की अंगुलियों की कृष्णा प्रबल व सदा विजयी रहने वाले तलवों की महासिद्ध व नखगणों की महान धरमी रक्षा करें।

त्वचा रखें धनुर्धर, अशुष्क सदा अभेद्य।
अस्थि मज्जा माँस मेद, शुद्ध रक्त अरू स्वेद॥३३॥

धनुर्धर त्वचा (शरीर के ऊपरी भाग का चमड़ा) को शुष्क न होने दें, बिना भेदने वाली कठोरतम करें, रक्त व पसीने को, मज्जा, वसा, माँस व हड्डियों की शुद्ध कर रक्षा करें।

आँतों की रक्षा करें, द्विज श्रेष्ठ द्विज रूप।
पित्त रखें निर्मल मेरा, नानाद्विपाधि भूप॥३४॥

मेरी आँतों को द्विजों में श्रेष्ठ व द्विज रूप धारी सुरक्षित रखें व नानाद्विपों का पालन करने वाले मेरे पित्त को शुद्ध बनाये रखें।

पद्म कोष तन में बसे, जहाँ जहाँ जिस देश।
रूप चतुर्भुज धार कर, रक्षो क्रूर सविशेष॥३५॥

तन के जिस-जिस स्थान पर पद्म कोष स्थित हैं वहाँ पर चतुर्भुजधारी क्रूर मेरी रक्षा करें।

कफ को श्री तिथ्यात्मा, रखें सदा निर्दोष।
यमभ्राता नखतेज को, आजीवन अभिपोष॥३६॥

मेरे कफ को श्री तिथ्यात्मा सदा निर्दोष रखें व यमभ्राता नखों के तेज का जीवन भर पोषण करें।

संधिस्थल तन के सभी, मार्गी से परित्रात।
अभिमर्दन अरि हेतु सदा, बनो निषंगी तात॥३७॥

मेरे तन के सभी संधिस्थल (जोड़) मार्गी से रक्षा प्राप्त हों, वे

खड्गधारी धनुर्धारी मेरे पिता होकर शत्रुओं को सदा ही कुचल डालें।

गणना से जो रह गये, इस तन के संस्थान।
मृत्युंजय रक्षित रखें, कर लेकर धनु बाण॥३८॥

इस तन के ऐसे सभी संस्थान जिनका यहाँ वर्णन नहीं हुआ, हाथों में धनुष बाण लेकर मृत्यंजय उनकी रक्षा करें।

अहंकार मन बुद्धि भी, सदा जो आत्म साथ।
रक्षित कर पोषण करे, यमुनानुज शनि नाथ॥३९॥

अहंकार मन बुद्धि भी जो अत्यन्त सूक्ष्म व आत्म साथ रहते हैं, वे यमुना के भाई मेरे शनि नाथ उनका पोषण करें व रक्षा करें।

प्राणापान उदान भी, व्यान संग समान।
प्राण रूप पिंगल करें, सभी प्राण बलवान॥४०॥

प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान– इन सभी पाँचों प्राणों को वे प्राण रूप पिंगल बलवान करें।

जय गगन जल धरनी से, भानुज हृदय पाप।
सर्वजित सभी भयों से, नखेश नाशों ताप॥४१॥

आकाश, जल, पृथ्वी से जय, हृदयस्थ सभी पापों से, भानुज सब प्रकार के भयों से सर्वजित व सभी तापों से नखेश मेरी रक्षा करें।

प्रथम प्रहर दिवस में, रक्षें श्री महाकाय।
द्वितीय तृतीय चतुर्थ में, बचावें राज्यदाय॥४२॥

दिन के प्रथम प्रहर में महाकाय व द्वितीय, तृतीय और दिन के अंतिम प्रहर में राज्यदाय मेरी रक्षा करें।

रात्रि आरम्भ सर्वज्ञ, घन अर्द्ध रात्रान्त।
गृह बीच अन्दर बाहर, रक्षें मम कृतान्त॥४३॥

रात्रि के आरम्भ में सर्वज्ञ, घन अर्द्धरात्रि में, रात्रि के अन्त में घर के

बीच में अन्दर व बाहर कृतान्त मेरी रक्षा करें।

शत्रु से रणभूमि में, सदा करावें जीत।
वनचर हिंसक जीव से, रक्षें वरिष्ठ अजीत॥४४॥

रणभूमि में शत्रु से, वन में विचरण करने वाले हिंसक जीवों से कभी ना हरने वाले अजेय वरिष्ठ मेरी रक्षा करें।

पाखण्ड से प्रमाद से, लगे न मुझे कलंक।
जन सेवा अपराध से, कृशतनु करे निरंक॥४५॥

पाखण्डियों से, आलस्य से मेरी रक्षा कर कृशतनु मुझे जन सेवा के समय हुए अपराधों से विमुक्त करें।

पिशाच व ब्रह्म राक्षस, प्रेत अरू बेताल।
भूत, यक्ष को भी करें, योगाधीश निढाल॥४६॥

भूत, पिशाच, यक्ष, ब्रह्मराक्षस, प्रेत, बेताल जो भी मेरे वैरी हों, उन्हें योगाधीश निढाल कर मेरी रक्षा करें।

बुरे स्वपन शकुन गति, दुर्भिक्ष अपथ उत्पात।
दुर्व्यसन संताप विषभय, रक्षें राशिग नाथ॥४७॥

बुरे स्वप्न, अपशकुन, गति, अकाल, दुर्गम मार्ग, उत्पात, बुरी आदतें, दुखों और विष के भय से राशिग नाथ मेरी रक्षा करें।

ग्रह-पीडा उच्चाटनादि, काल भय सकल रोग।
क्षुधा-तृषा निवारिये, विशालाक्ष महोग॥४८॥

ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीडा, शत्रु द्वारा किए गए उच्चाटन काल के भय व सकल रोग, अधिभूख व अधिप्यास का विशालाक्ष महोग निवारण करें।

कलिदोष कुपथ्य मार्ग से, रक्षे अक्षयफलदाय।
योग विघ्न अपवाद से, राहु सखा बचायें॥४९॥

कलियुग में उत्पन्न दोषों से, गलत कार्यों से अक्षयफल देने वाले व योग में आने वाले विघ्न व बदनामी से राहु सखा सदैव मेरी रक्षा करें।

कालकृत रक्षा करें, शब्द स्पर्श गंध रस।
रूप रहे रक्षित सदा, निकट न आवे अयश॥५०॥

शब्द, स्पर्श, गंध, रस आदि विषयों का अनुभव करते समय कालकृत रक्षा करें व मेरे रूप, कीर्ति का विस्तार करें।

लक्ष्मी यश अरू कीर्ति, पुत्र भी रहे सबल।
भार्या की रक्षा करें, महाग्रह संग दल॥५१॥

महाग्रह दल सहित धन, यश, पुत्र तथा मेरी भार्या की रक्षा करें।

आयु को रक्षें सदा, गोत्र की रखें लाज।
धर्म मेरा रक्षित करें, सिद्धेश्वर महाराज॥५२॥

सिद्धेश्वर महाराज मेरा धर्म, गौत्र तथा आयु की सदैव रक्षा करें।

सत्व बढ़े रज तम घटे, रहे सदा ही शांत।
मन को भी कंचन करे, गुणाढ्य अरू अक्रांत॥५३॥

इस तन में सतोगुण बढ़े व रज, तम (शांति पाये) घटे व अविजित गुणाढ्य मेरे मन को भी पावन व त्रिगुण को दोष रहित करें।

विमुक्ति कर्मबन्धन से, करे भैंसा वाहन।
वैरी विषधर सर्पों का, कुचले जटाधर फन॥५४॥

शनि वाहन भैंसा मुझे सभी कर्मबन्धनों से मुक्त करे व मेरे वैरी भयंकर विष वाले सर्पों का जटाधर फन कुचल डालें।

वामवेध जन्मांग से, रहे शनि जी दूर।
भीषण द्वादस भाव में, न डालें दृष्टि क्रूर॥५५॥

शनि जी वामवेध व जन्मांग से दूर रहवें और बारह भावों में भीषण शनि किसी भी स्थान में अपनी क्रूर दृष्टि न डालें।

कुजाय न्यास क्रम से, करे पाठ परिपूर्ण।
सौम्य विषय विकार से, रक्षें मम सम्पूर्ण॥५६॥

मंगल शनि रक्षा कवच को न्यास क्रम से परिपूर्ण करें व सौम्य विषय विकारों से मेरी रक्षा करें।

काल बचावें काम से, गिद्ध देव अपराध।
गज बचावें नरकों से, पाकर गति अबाध॥५७॥

वे कालरूप मुझे काम के तीव्र आघात से व उनका वाहन गिद्ध देव सेवा में किए गए अपराधों से, उनका वाहन हाथी मुझे नरकों से अपार गति पाकर बचायें।

निश्चल बाधाएँ सकल, नष्ट करे तत्काल।
टाले अकाल मृत्यु शनि, काटे द्वन्द्वा जाल॥५८॥

सभी बाधाओं को उसी क्षण नष्ट कर अकाल मृत्यु को टालकर व सभी द्वन्द्वों को काटकर वे निश्चल शनि मेरी रक्षा करें।

तपोरूप निज क्षेत्र से, देवें सिद्धि अनेक।
नीलछत्र रक्षित रखें, सकल स्तुति मम लेख॥५९॥

तपोरूप (कल्याणकरी क्षेत्रों में) अपने अधिकार क्षेत्रों में सिद्धि प्रदान करें व मेरे द्वारा विरचित सभी स्तुति व लेखों को नीलछत्र रक्षित रखें।

गोचर जन्म लग्न में, महादशा आ जाय।
शनि रक्षा कवच शक्तिवत, करो पठन मन लाय॥६०॥

गोचर में जन्म, लग्न में या शनि की महादशा में साढ़ेसाती, ढैय्या, अन्तर्दशा में शनि रक्षा कवच का शक्तिवत पाठ कीजिए।

भय बन्धन पीड़ा सकल, ग्रह बाधा हो दूर।
जन्म लगन दोष हर दें, धन यश सुख भरपूर॥६१॥

भयबन्धन सकल पीड़ा व जन्म लग्न से उपस्थित दोष अन्य ग्रह द्वारा

उपस्थित बाधा दूर कर यह शनि रक्षा कवच धन, यश और पूर्ण सुख प्रदान करता है।

सब संकट दुर्भिक्ष में, कवच ले हृदय धार।
वाम दृष्टि रक्षा करें, बन अभेद्य प्राकार॥६२॥

सभी संकटों में, अकाल में यह कवच हृदय में धारण करने से वे वामदृष्टि, आपके चारों ओर अभेद्य वृत बनाकर आपकी रक्षा करेंगे।

ब्रह्मचर्य अरू मूक हो, पठन करे शुद्ध चित्त।
हो पूजित महि पर सदा, होकर कवचावृत्त॥६३॥

ब्रह्मचारी व मौन होकर शुद्ध चित्त से जो इसका पठन करते हैं, कवचधारी होकर वे इस भूमि पर सदा वन्दनीय होते हैं।

दुर्लभ शनि का कवच यह, करे पाठ त्रिकाल।
अपराजित भू-लोक पर, बनें शनि प्रतिपाल॥६४॥

शनि का यह कवच अति ही दुर्लभ व शीघ्र फलदायी है जो लोग इसका पाठ करते हैं, वे इस पृथ्वी लोक पर अपराजित होकर शनिदेव की कृपा प्राप्त करते हैं।

इति श्री शनिभक्त मनु विरचितं शनि रक्षा कवच स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शनिदेव मैं शरण तुम्हारी, बेड़ा पार करो उद्धारी।
सकल जगत है माया फंदा, गल फाँस छुड़ाओ विरद विचारी।
काम क्रोध मद लोभ सतावे, मार गिराओ बारी बारी।
बहु-कष्ट तन उपर छाए, इन्हें भगाओ बन उपकारी।
श्वाँस-श्वाँस तेरा गुण गाऊँ, 'मनु' कहाऊँ नाम प्रचारी॥